International Journal of Applied Research 2023; 9(7): 339-343

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(7): 339-343
www.allresearchjournal.com
Received: 01-05-2023
Accepted: 05-06-2023

Rani Singh
Research Scholar, Department of Political Science, Kalinga University, Raipur, Chhattisgarh, India

Dr. Sandhya Tiwari
Professor, Department of Political Science, Kalinga University, Raipur, Chhattisgarh, India

Corresponding Author:
Rani Singh
Research Scholar, Department of Political Science, Kalinga University, Raipur, Chhattisgarh, India

भारतीय राजनीति में मीडिया की भूमिका

Rani Singh and Dr. Sandhya Tiwari

सारांश
मीडिया जनसमूह तक सूचना, शिक्षा और मनोरंजन पहुंचाने का एक माध्यम है। यह संचार का सरल एवं सक्षम माध्यम है। जिसके द्वारा देश–विदेश की जानकारी, डाटा को एक साथ लाखों लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। प्राचीन काल में लोग अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के लिए नृत्य, संगीत, नृत्यनाटिका आदि का प्रयोग करते थे। समय के साथ इसमें बदलाव आया और लोग अपनी बातों को आधुनिक संचार माध्यमों द्वारा व्यक्त करने लगे, जिसे मीडिया कहा जाता है। यह एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण सस्था है। यह किसी भी समाज या राष्ट्र का प्रतिबिम्ब होता है, तथा राट्र या समाज के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रतिबिम्बित करता है। इसने सदैव मानव के विचारों एवं व्यवहारों को प्रभावित किया है। विभिन्न देशों में होने वाली राजनैतिक व सामाजिक क्रांतियों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी कारण ब्रिटिश विचारक आमण्ड वर्क ने इसे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा है।

कूटशब्द : मीडिया, प्राचीन काल, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक

प्रस्तावना
प्रजातंत्र का मूलाधार है– स्वतत्रता, समानता और बन्धुत्व और जहां कहीं भी विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की पूर्ण स्वतंत्रता नहीं होती है वहां लोकतंत्र असफल हो जाता है। इस स्वतंत्रता का सही ढंग से प्रयोग मीडिया द्वारा ही किया जाता है। देश के सभी कोनों और घटनाओं पर इसकी पैनी दृष्टि होने के कारण ही शक्तिशाली शासक भी इसके महत्व एवं शक्ति की उपेक्षा नहीं कर पाते। इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण मिलते है, जब इसकी शक्ति को पहचानते हुए लोगों ने इसका उपयोग लोक परिवर्तन के भरोसेमंद हथियार के रूप में किया है।
आज भी इसकी ताकत के सामने बड़े से बड़ा नेता, उद्योगपति आदि सभी नतमस्तक है। जन जागरण में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है– बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने का अभियान, एड्स के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य लोगों को वोट डालने के लिए प्रेरित करना, बाल मजदूरी पर रोक लगाने के लिए प्रयास करना, धूम्रपान के खतरों से अवगत कराना जैसे नेक कार्यों में इसकी सराहनीय भूमिका रही है।
इसके अलावा यह देश के भ्रष्टाचारियों पर भी नजर रखती है, तथा समय–समय पर स्टिंग आपरेशन कर इन सफेदपोशो का काला चेहरा समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है। इस प्रकार यह एक वरदान की तरह है। मीडिया का यथार्थ जानने की कोशिश करना ठीक वैसा ही है जैसे ब्रम्ह के यथार्थ को जानने का प्रयास करना, यह अनुभव मात्र की वस्तु है यह अनुभवगम्य है तथा इन्द्रियातीत है। मनुष्य के सीधे–सादे जीवन को मीडिया ने केवल प्रभावित ही नहीं किया है वरन् परिवर्तित भी किया है।
जिज्ञासा और संचार मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है। एवं आदिकाल से ही मनुष्य देश–दुनिया, समाज और ब्रम्हाण्ड के बारे में जानने को उत्सुक रहा है, तथा अपनी उत्सुकता को शांत करने के लिए वह धार्मिक प्रवचन, कथा–वार्ता, यात्र–वृत्तांत और पर्यटन का सहारा प्रारम्भिक युग से ही लेता आ रहा है। परन्तु कालान्तर में सभ्यता के विकास और भाषा के आविष्कार के साथ मनुष्य की जिज्ञासा शांत करने की प्रक्रिया का स्वरूप भी परिवर्तित होता रहा, तथा सभ्यता के विकास के साथ वे बोलकर, गाकर तथा अभिनय द्वारा विचारों का आदान–प्रदान करने लगे। भाव सम्प्रेषण की इस प्रक्रिया को संचार कहा जाता है। इसके लिए किसी न किसी माध्यम का होना आवश्यक है। आदिकालीन समाज में जहां संकेतों–प्रतीकों का आश्रय लिया जाता था वहीं सभ्यता के विकास के साथ धार्मिक कथाएं, प्रवचन, गीत, संगीत, पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें, रेडियो, टेलीविजन और कम्प्यूटर आदि संचार माध्यमों के रूप में है।

भारत में संचार माध्यम (मीडिया)

एक स्वस्थ्य लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है कि वहां की मीडिया सशक्त, निष्पक्ष एवं दबाव मुक्त हो, चूंकि लोकतंत्र में जनहित को वरीयता दी जाती है, अतएव लोकतांत्रिक व्यवस्था में इसकी जिम्मेदारी कहीं अधिक बढ़ जाती है। चूंकि मीडिया को जनता की आवाज माना जाता है, इसलिए उससे निष्पक्षता एवं निर्भीकता की अपेक्षा लोकतंत्र के रक्षक के रूप में की जाती है। इसका निष्पक्ष एवं तटस्थ होना तथा सच से प्रतिबद्व होना जरूरी है। लोकतंत्र में मीडिया को चतुर्थ जनशक्ति का स्थान इस लिए दिया गया है कि यह जनहितों की पैराकारी करते हुए सदैव लोकतंत्र को सार्थक आयाम देने के लिए कटिबद्व रहता है।

भारतीय संविधान में यद्यपि अलग से मीडिया की स्वतंत्रता का कोई उल्लेख नहीं है, परन्तु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में ही मीडिया की भी स्वतंत्रता अन्तर्निहित है। यह स्थिति भारतीय मीडिया के लिए विशेष लाभाकारी और स्वस्थ्य लोकतंत्र के निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

भारत में जनसंचार की अवधारणा काफी पुरानी है। श्री वी0 एन0 मल्हन ने भारत की संचार व्यवस्था को महर्षि नारद तथा संजय जैसे चरित्रों से जोड़कर मौर्यवंश तथा मध्यकालीन भारत की संचार व्यवस्था का विस्तार से वर्णन किया है, जिस भोजन और पानी। यह एक अत्यन्त व्यापक अवधारणा है, जिससे मनुष्य द्वारा अभिव्यक्ति के सभी

प्रकार के माध्यम– शब्द, चित्र, संगीत, अभिनय, मुद्रण आदि समाहित किये जा सकते है। संचार उतना ही पुराना है जितना पुराना मानव इसके लिए भाषा का माध्यम बनना अनिवार्य नहीं है। संकेत, हाव–भाव, ध्वनियां, गीत, नृत्य सभी के द्वारा संवाद स्थापित किया जा सकता है। यह एक सहज प्रवृत्ति है। समस्त प्राणी जगत संचार की एक लम्बी नैसर्गिक श्रृंखला से जुड़ा हुआ है अर्थात ऐसा कोई भी क्षण नहीं होता, जब हम संचार की प्रक्रिया से न गुजर रहे हों।

भारतीय मीडिया ने अपने नैतिक उद्यमों, मूल्य आधारित पत्रकारिता, गम्भीर चिन्तन और सटीक बयानी से विशिष्ट पहचान बनाई है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए अति आवश्यक है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं प्रासंगिता

हम यह कह सकते हैं कि लेखक ने भारतीय मीडिया और राजनीति के अन्तर्गत राष्ट्रीय आन्दोलन के माध्यम से इसके विस्तृत सम्बन्धो को दर्शाने का प्रयास किया है। लेखकों का यह मानना है कि किसी भी देश के राष्ट्रीय आन्दोलन को मीडिया के द्वारा वृहद स्तर पर सहयोग प्रदान किया जाता है और भारतीय मीडिया ने भी इस कार्य को बेहतर तरीके से करने का कार्य सम्पादित किया है। राष्ट्रीय आन्दोलन में पत्रकार और राष्ट्रवादी दोनों में एक ही व्यक्ति कार्यरत था और वह था एक भारतीय जिसे अपने देश और नागरिकों के लिए स्वतंत्रता प्राप्त कर गौरव हासिल करना था। इस कार्य मे मीडिया ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन बखूबी निभाया।

प्रस्तुत पुस्तक में जहां लेखकों ने पंडित नेहरू के नेतृत्व में अपनी आस्था व्यक्त की है, वही गॉधीवादी राजनीति में नेहरू जी की पूर्ण निष्ठा मे कमीं आयी है। अत्यधिक आदर्शवादी दृष्टिकोण तथा जनवादी चीन के ऊपर जरूरत से ज्यादा भरोसे की उन्होने आलोचना की है।

लेखक ने पुस्तक के माध्यम से बताने का प्रयास किया है कि इतिहास और समाज विज्ञान के विद्यार्थी व शिक्षक इस प्रकार की पुस्तकों के आधार पर अपनी खुद की सोच विकसित करे। साथ ही उन्होने स्पष्ट किया है कि ऐतिहासिक घटनाओं का विधिवत अध्ययन करना ही काफी नहीं है अपितु उन्हें तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व वैज्ञानिक विकास के साथ जोड़ना भी आवश्यक है। आज के कम्प्यूटर युग में क्या हुआ ही पर्याप्त नहीं है वरन् यह जानना भी जरूरी है कि कैसे हुआ क्योंकि आज का चिन्तनशील विद्यार्थी यह भी सोच सकता है कि ऐसा न हुआ होता तो क्या होता। जो बातें हमें इस पुस्तक के अध्ययन के पश्चात ज्ञात हुआ वह यह कि लेखक ने इस सम्पूर्ण इतिहास वृत्तान्त में मीडिया के सही रूप में परिभाषित नहीं किया है जो स्थान वास्तव में मीडिया का उस समय का था उसकी कहीं ना कहीं उपेक्षा की गयी है। आज मीडिया को विश्व की किसी भी राजनीतिक व्यवस्था का केन्द्र विंदु माना जाता है और कोई भी राजनीतिक व्यवस्था बिना संचार माध्यम के सहयोग के अपनी प्रगति को सुनिश्चित नहीं कर सकती है। फिर भारतीय मीडिया तो राष्ट्रीय आन्दोलन से लेकर आज तक भारतीय राजनीति से साये की तरह जुड़ी रही है अतः किसी भी इतिहास लेखक के द्वारा राजव्यवस्था के इस मीडिया पक्ष को उपेक्षित किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है।

साहित्य की समीक्षा

डॉ0 रूपा मंगलानी :– ने अपनी पुस्तक भारतीय शासन एवं राजनीति के सैद्वान्तिक एवं व्यवहारिक पहलुओं को छूने का प्रयास किया है। स्वतंत्रता की आधी शताब्दी पार कर चुका लोकतंत्र अभी भी गतिमान और निरन्तर अग्रसर राष्ट्र के रूप में सदैव गतिमान है। लेखिका का मानना है कि तमाम अन्तर्विरोधों, तनावों, अवरोधों एवं विविधताओं के बावजूद भारत का लोकतांत्रिक ढ़ांचां अविच्छिन्न चल रहा है। हांलाकि पिछले 5–6 दशकों में भारतीय राजव्यवस्था के समक्ष अनेक संकट उत्पन्न हुए हैं और इन संकटों की पृष्ठभूमि में राजनीतिक व्यवस्था के पुनर्रचना की मांग भी उठी है। लेखिका के अनुसार उदारीकरण की नीतियों के प्रभाव के परिणाम स्वस्थ्य और सामाजिक परिस्थितियों में भारतीय लोकतंत्र के समक्ष नवीन पश्नों के सन्दर्भ में राजनीतिक संस्थाओं को प्राणवान बनाने की आवश्यकता अनुभव की जाती है। लेखिका ने स्पष्ट किया है कि भारत एवं भारतवासियों को स्वयं यह तक करना होगा कि उनकी शासनिक संस्थाओं एवं राजनीति का गंतब्य क्या हो ? भविष्य क्या हो ? भारतीय स्वयं अपने शासन एवं राजनीति की चुनौतियों का निराकरण कर सकते है। अंधकार से प्रकाश की ओर गतिमान होने का जज्बा भारतवासियों में मौजूद है। यद्यपि कि लेखिका ने भारतीय राज्यव्यवस्था के सन्दर्भ मे भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की एक विस्तृत और सारगर्भित विवेचना की है।

डॉ0 पृथ्वीनाथ पाण्डेय :– ने अपनी पुस्तक में मीडिया के वर्तमान परिवेश का राजनीति पर पड़ रेह प्रभाव का अध्ययन किया है जो निम्नवत है– मीडिया वर्तमान व्यवस्था में एक आकर्षण बन गया है। देश की गुलामी के समय प्रकाशित होने वाले अधिकतर समाचार पत्र भारतीय भाषाओं मे प्रकाशित हुआ करते थे। और इसकी आर्थिक स्थिति भी दयनीय थी। सत्ता हस्तान्तरण के साथ स्थितियां बदली परन्तु प्रेस और राजनीति के सम्बन्ध अटूट रहे है।

लेखक ने अपनी पुस्तक मे भारतीय प्रेस क इतिहास उसके राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान और स्वतंत्रता के पश्चात भारत मे होने वाले उत्थान को दर्शाने का प्रयास किया है। पुस्तक में लेखक ने पत्रकारिता के साथ ही हिन्दी साहित्य के इतिहास एवं भारतीय राजनीति पर प्रेस एवं समाचारपत्र, पत्रिकाओं के प्रभाव का भी अध्ययन करने का प्रयास किया है। समय परिस्थिति के अनुसार लेखक ने स्वतंत्रता पश्चात भारतीय मीडिया जगत की उपलब्धियों, असंगतियों, और दुर्बलताओं पर भी प्रकाश डाला है। स्थान–स्थान पर लेखक के द्वारा अन्य प्रेस समाचार पत्र, पत्रिकाओं की भाषा वाक्य गठन एवं शब्द संचयन पर भी ध्यान दिलाया है। भारतीय मीडिया जगत की अपनी जिम्मेदारियो को देखते हुए लेख के द्वारा अनेको जगह पर भारतीय लोकतंत्र के लिए एवं इसके सफल कार्यकरण को सुनिश्चित कराने के लिए मीडिया की भूमिका पर उसे सराहना

और प्रात्साहन भी प्रदान किया है तथा अनेक स्थानों पर उसे लोकतंत्र के विकास को अवरूद्व करने के लिए फटकार भी लगाया है।

भारत हो विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, इसमें भी मीडिया की अहम भूमिका है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि, स्वतंत्रतास संग्राम के समय स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी अपने विचारों और ब्रिटिश सरकार के शोषण और अत्याचार को जनता तक पहुंचाने के लिए समाचार पत्र और सप्ताहिक पत्रिकाओं का सहारा लिया करते थे।

समंक संकलन के स्रोत

प्रत्येक शोध अध्ययन को करने के पीछे कुछ उद्देश्य निहित होते हैं और उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये यह आवश्यक है कि शोध कार्य को योजनाबद्ध तरीके से किया जाये। इसी योजना की रूपरेखा को शोध प्ररचना कहते हैं। कर्लिगर के अनुसार शोध प्रचना अनुसंधान की योजना, संरचना एवं व्यूह रचना है जिसकी मदद से शोध के प्रश्नों का उत्तर प्राप्त किया जाता है तथा विषमता पर नियंत्रण करते हैं। इस शोध प्रारुप में शोध की प्रकृति सैद्धान्तिक, विवरणात्मक एवं तर्कपूर्ण विश्लेषणात्मक है।

प्राथमिक स्रोत

प्राथमिक स्रोत वे हैं जिनसे अध्ययनकर्त्ता पहली बार तथ्यों अथवा विभिन्न जानकारी संकलित करता है। प्राथमिक स्रोत भी दो प्रकार के होते हैं (1) प्रत्यक्ष स्रोत एवं (2) अप्रत्यक्ष स्रोत। इस शोध में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही स्रोतों से तथ्य संकलित किए जायेंगें। प्रत्यक्ष स्रोत वे हैं जिनमें अनुसंधानकर्ता मूर्त घटनाओं को स्वयं अपने सम्मुख घटित होते देखता है अथवा घटना स्थल पर जाकर अपने अध्ययन विषय सम्बंधित जानकारी को अवलोकित करता है। इसे दो प्रकार से किया जा सकता है अवलोकन एवं साक्षात्कार अथवा मौखिक छानबीन से है। अप्रत्यक्ष प्राथमिक स्रोत में प्रश्नावली के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

द्वितीयक स्रोत

शोध अध्ययन के सैद्धान्तिक पक्षों का विवेचन करने के लिए द्वितीयक स्रोतों से सूचनाएं एकत्रित की जायेंगी। इन द्वितीयक स्रोतो में सार्वजनिक प्रलेख की प्रकाशित सामग्री में विभिन्न पुस्तकें, संदर्भ–सूचियाँ, समाचार पत्र, (पत्रिका, दैनिक भास्कर, दैनिक नवज्योति आदि), पत्रिकाएं, शोध संस्थान, पुस्तकालय, अप्रकाशित लघु शोध ग्रन्थ, शोध प्रबंध, शोध–पत्र एवं लेख आदि सम्मिलित हैं।

भारतीय राजनीति में मीडिया की भूमिका

भारत विश्व का विशलतम लोतांत्रिक देश है। लोकतंत्र का सामान्य अर्थ लोप्रिय सम्प्रभुता पर आधारित शासन होता है। इस व्यवस्था में जनता का जनता के लिए औरजनता द्वारा शासन होता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता के विविध अधिकार व स्वतंत्रताएं प्राप्त होतीं हैं जिसमें भषण व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

भारतीय लोकतंत्र में मीडिया ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित कर ली हैं। जहां तक मीडिया की बात है, इससे हमारा अभिप्राय व्यापक स्तर पर सूचनाओं के सम्प्रषण में लगे माध्यमों से है, दूसरे शब्दों में सूचना को प्रकाशन, सम्पादन, लेखन अथावा प्रसारण के कार्य में प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक माध्यमों से आगे बढ़ने की कला की मीडिया कहते हैं। यदि गहनता से इस पर विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि मीडिया दो तरह की है– प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया। पत्र–पत्रिआए, पम्पलेट आदि प्रिंट मीडिया के अन्तर्गत आते हैं। वहीं रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, फिल्म व ई–मेल आदि इलेक्ट्रानिक मीडिया के भाग है।

1 आज के समय में इलेक्ट्रानिक मीडिया का ही एक भाग सोशल मीडिया के नाम से लोकप्रिय हो रहा है। जिसके अन्तर्गत प्रमुख रूप से प्रभावी फेसबुक, व्हाटसअप, ट्विटर, ब्लॉग आदि है।

लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए स्वतंत्र एवं निष्पक्ष प्रेस आवश्यक है। भारत में प्रेस का एक लम्बा इतिहास रहा है। ब्रिटिश सरकार ने प्रेस को नियंत्रित करने के लिए अनेक विधियों का निर्माण किया जिसमें इण्डियन प्रेस एक्ट 1910 और 1931–32– इण्डियन प्रेस (इमरजेन्सी) अधिनियम आदि उल्लेखनीय है।

स्वतंत्रता पश्चात संविधान निर्माताओं ने प्रेस की स्वतंत्रता पर विशेष जोर दिया। संविधान में भाषण व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अन्तर्गत ही प्रेस की स्वतंत्रता निहित है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1) द्वारा नागरिकों को भाषण अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की गयी है जिसमें प्रेस की स्वतंत्रता भी निहित है। इसी तथ्य को समय–समय पर उच्चतम न्यायालय ने अपने निर्णय द्वारा स्थापित किया है। प्रेस की स्वतंत्रता की महत्ता को स्पष्ट करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान इसे स्वराज का एक आवश्यक कारक माना। गांधी जी के अनुसार भाषण की स्वतंत्रता संगठन की स्वतंत्रता और प्रेस की स्वतंत्रता की पुनः स्थापना ही स्वराज का मूल ध्येय है।

मीडिया की स्वथ्स्य लोकतंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह लोकतंत्र का आधार है। मीडिया संसार में तथा हमारे चारो ओर घटित होने वाली सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक गतिविधियों के प्रति हमें जागरूक करती है। यह वह दर्पण है जो हमें जीवन के कड़वे सत्य और कटु वास्तविकताओं को दिखाती है या दिखाने का प्रयास करती है। लोकतंत्र का एक बड़ा साधन निर्वाचन है और मीडिया पिछले कुछ वर्षो में अति सक्रिय हुई है। टी0वी0 न्यूज चैनल्स निर्वाचन से पूर्व राजनीतिज्ञों को उनक द्वारा किये गये वादों को याद दिलाते हैं और जनसाधारण विशेष रूप से निरक्षर व्यक्ति को सही व्यक्ति का निर्वाचन करने मे सहायता प्रदान करते हैं और सत्ता मे बने रहने के लिए राजनीतिज्ञों को अपने आश्वासनों को पूरा करने का दबाव डालते है। यह लोकतांत्रिक व्यवस्था के छिद्र–विंदुओं को उजागर कर सरकार को उन्हें दूर करने के लिए प्रेरित करती है। और सरकार को अधिक जवाबदेह , उत्तरदायी और नागरिकों के अनुरूप बनाने मे सहायता करती है। इसके अभाव में लोकतंत्र बिना पहिये का वाहन के समान है। मीडिया ही स्वस्थ्य जनमत निर्माण का साधन है। इसने भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दलों एवं सदस्यों के नैतिक अवमूल्य एवं भ्रष्टाचार को अपने स्टिंग आपरेशन के द्वारा सबके सामने प्रस्तुत किया है। इस तरह के सत्य अनन्वेंष्ण एवं तथ्यों की प्रस्तुति से जनता जनार्दन अपने प्रतिनिधियों के कृत्यों से न केवल अवगत होते हैं वरन् भविष्य के लिए सचेत भी रहती है।

मीडिया द्वारा किये गये विविध स्टिंग आपरेशन में आपरेशन दुर्योधन एवं आपरेशन चक्रव्यूह विशेष उल्लेखनीय है। मीडिया द्वारा किये गये इन आपरेशन ने हमारे सम्मुख इस तथ्य को रखा कि हमारे नेता गण किस प्रकार अपने विशेषाधिकार को कितने सस्ते में बेचने को तैयार हैं बल्कि इससे यह भी पता चलता है कि संसद व अपने अधिकार को यह किस तरह से देखते हैं। करीब दस महीने तक चले आपरेशन दुर्योधन ने जाहिर कर दिया कि कैमरे का सही इस्तेमाल करते हुए जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की करतूतों का भण्डाफाड़ किया जा सकता है। संसद में सवाल उठाने के नाम पर पैसे लेने वाले सांसदों की सूची जब मीडिया ने जनता के सामने सब प्रमाणों के साथ प्रस्तुत की तो भारतीय लोकतंत्र का बदशक्ल चेहरा जनता के सामने उजागर हो गया। इसी तरह चक्रव्यूह आपरेशन में सांसद होने के अहंकार में वे यह भूल गये कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया का एक मजबूत तम्भ है।

भारतीय लोकतन्त्र में मीडिया की भूमिक

लोकतन्त्र को पूरे विश्व में स्थापित करने के लिए मीडिया ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेष रूप से अमेरिकी स्वतंत्रता आन्दोलन और फ्रांसीसी क्रांति के समय से, यह जनता तक पहुंचने और ज्ञान के साथ उन्हें सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भारत के औवनिवेशिक नागरिकों के लिए मीडिया, जानकारी का एक स्रात बन गयी है। क्योंकि वे ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की निरंकुशता के बारे में जागरूक हो गये हैं। और भारत के स्वतंत्राता आन्दोलन को एक नई शक्ति मिली, और लाखों भारतीय ब्रिटिश साम्राराज्य के खिलाफ लड़ाई में नेताओं के रूप में शामिल हुए। वर्ष 1975 में आपातकाल के समय प्रेस सेंसरशिप के दिनों से लेकर 2014 के लोकसभा चुनावों तक भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका में महत्वपूर्ण बदलाव आया है।

चूंकि मनुष्य अपने आस–पास घटित होने वाली घटनाओं के बारे में सदा जानने को इच्छुक रहता है, इसलिए उसकी यह इच्छा वर्तमान समय में विश्व की प्रमुख गतिविधियों तक बढ़ गयी है, तथा जानने की यह उत्कंठा जन संचार के विभिन्न साधनों से ही पूरी हो पाती है, इसका क्षेत्र काफी विस्तृत और बड़ा होता जा रहा है, यह दैनिक जीवन का एक हिस्सा बन गया है। यदि किसी दिन हमें समाचार–पत्र न मिले तो हमें जीवन में रिक्तता की अनुभूति होती है।

मीडिया में प्रिंट हो या इलेक्ट्रानिक दोनों के विषय में जन मानस के बीच अनेक प्रकार के विचार सुनने को मिलते हैं, कोई इसे वर्तमान और भविष्य की दिशा तय करने वाला सशक्त माध्यम मानता है तो कुछ इसके बारे में ऐसी भी धारणा रखते है कि आजादी के बाद इसने अपना नैतिक स्तर खो दिया है, परन्तु जो भी धारणा हो, एक बात तो स्पष्ट है कि भारतीय राजनीति में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

लोकतंत्र में मीडिया का महत्व

भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था कार्यरत है जिसे जनतांत्रिक अथवा प्रजातांत्रिक व्यवस्था भी कहा जाता है। यह चार स्तम्भों पर खड़ा है– सरकार, विधानमण्डल, न्यायपालिका तथा मीडिया। प्रजातंत्र की सफलता के लिए इन चारो स्तम्भों का अमूल योगदान समान रूप से महत्वपूर्ण है। मीडिया में लोकतंत्र के लिए बेहतर दुनिया और भविष्य बनाने की सर्वाधिक क्षमता और शक्ति है। यह विभिन्न घटकों का समुच्चय है। तथा उसके सभी घटक मिलकर कार्य करते हैं लोकतंत्र की स्थिरता तथा विकास में मीडिया की भूमिका बहुत ही अहम है। राजनीति, खेल, शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी, भ्रष्टाचार, मंहगाई, विस्थापन, आपदाएं, सामाजिक स्वाथ्स्य, स्थानीय समस्याएं जैसे मुदद्ों को वरीयता देकर तथा इनके सम्बन्ध में जनजागृति कर मीडिया ने लोकतंत्र के मायने ही बदल दिये है।

सरकार द्वारा किये गये निर्णयों, योजनाओं को सही समय पर जनता तक पहुंचाने का कार्य मीडिया ही करती है। यह आज के युग की वह शक्ति है जिसके होते और यही इस्तेमाल से कुछ भी असम्भव नहीं रहता है।

लोकतंत्र में जनता और सरकार के मध्य सम्पर्क, अटूट रिश्ता एवं समन्वय लाभदायक होता है। कुछ वर्ष पूर्व जनता और सरकार के मध्य सम्पर्क के अभाव के कारण दूरी बनी हुई थी उसे मिटाने का कार्य मीडिया ने किया है। यदि कोई घटना जन विरोधी है तो जनता की आवाज सरकार तक पहुंचाने का कार्य इसी के माध्यम से किया जाता है।

लोकतंत्र केवल एक शासन व्यवस्था नहीं है बल्कि इसका स्वश्प अत्यंत व्यापक है। लोकतंत्र की शुरूआत प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक परिवार से होती है। यह एक विचार हे, जिसे घर–घर तक पहुंचाने का कार्य माध्यमों ने और खासकर चौनलों, समाचार पत्रों तथा रेडियों ने किया है। चूंकि भारत में पितृसत्तत्मक पद्वति प्रचलित है। तथा घर के सभी निर्णय करने का अधिकार केवल मुखिया को था। अतः देश में लोकतंत्र होते हुए भी परिवारों के कोई भी निर्णय सभी सदस्यों के विमर्श से नहीं होता था। परन्तु आज स्थिति बदल चुकी है संचार माध्यमों के कारण उचित संस्कार जनता पर हो रहे हैं।

वर्तमान में अधिक संख्या में चैनल तथा प्रत्येक की पसंद भिन्न होते हुए भी शाम हो जब सारा परिवार घर पहुंचता है तब एक कार्यक्रम देखने पर एकमत होता है। इन्ही छोटी–छोटी बातों से हमारा लोकतंत्र मजबूत हो रहा है लोगों को ज्ञानवान, सजग बनानें में मीडिया अपनी भूमिका बखूबी निभा रही है। आज इसके कारण लोग न केवल खबर जानते हैं बल्कि उसके कारण, विश्लेषण का भी संज्ञान रखते है और उस पर परिचर्चा भी करते है।

संचार माध्यम आज अनेक रूपों में मौजूद है। जो मीडिया 30–40 वर्ष पूर्व केवल दुरदर्शन के नाम से लोकप्रिय थी आज इतनी विकसित हो गयी है कि उसपर चलने वाली, प्रसारित की जाने वाली हर विधा के आधार पर चैनलों के कई प्रकार हो गये हैं। समाचार चैनल, माडलिंग चैनल, केवल गानों के लिए चैनल, धारावाहिक के लिए चैनल, फिल्मों के लिए चैनल, खाना बनाने से सम्बन्धित चैनल, खेलों के नये चैनल उनमे भी नये खेलों के लिए विशिष्ट चैनल आदि।

निष्कर्ष

मीडिया अथवा जनसंचार माध्यम किसी भी समाज या राष्ट्र की वास्तविक स्थिति के प्रतिबिम्ब होते हैं। यह संदेशों एवं सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है। यह संदेशों के माध्यम से की जाने वाली सामाजिक अन्तक्रिया है। इसे पहले प्रेस के नाम से जाना जाता था, एवं इसका कार्य विश्वभर मे घटित होने वाली सूचनाओं का संग्रहण कर सर्वजन को सुलभ करना था। समय के साथ इसके स्वूरूप में परिवर्तन हुआ तथा वर्तमान में इस अन्तःक्रिया का नामकरण मीडिया के रूप में हो गया।

मीडिया का शाब्दिक अर्थ है– माध्यम, साधन या सेतु। वर्तमान समय में इस शब्द का प्रयोग जनसंचार के माध्यम अर्थात रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, पत्रिकाओं इत्यादि के लिए किया जाता है। यह किसी भी समाज या राष्ट्र का प्रतिबिम्ब होता है तथा राष्ट्र व समाज के राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रतिबिम्बित करती है। इसने सदैव मानव के विचारों एवं दृष्टिकोण को प्रभावित किया है। विभिन्न देश में होने वाली राजनीतिक व सामाजिक क्रांतियों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, इसी कारण ब्रिटिश विचारक एडमण्ड वर्क ने इसे लोकतंत्र का 'चौथा स्तंभ ' कहा है। प्रजातंत्र का मूलाधार है– स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व और जहां कहीं भी विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की गयी है वहां इस स्वतंत्रता का पूर्ण और सही ढंग से प्रयोग मीडिया द्वारा ही किया जाता है। देश के सभी कोनों और घटनाओं पर इसकी पैनी दृष्टि होने के कारण ही शक्तिशाली शासक भी इसके महत्व एवं शक्ति की उपेक्षा नहीं कर पाते।

सन्दर्भ

1. मित्तल, जे0के0 (1991), पार्लियामेंटरी डिसेंट डिफेक्शन एण्ड डेमोक्रेसी, 35 जे0 आई0 एल0 आई0–7
2. मिर्धा, आर0एन0 एवंज ैन, आर0 बी0 (2001), रिव्यू आफ दी वर्किंग ऑफ पॉलिटिकल पार्टीज स्पेशियली विद रिलेशन टू इलेक्शन एण्ड रिफार्म आप्शंस, इस्टीट्यूट ऑफ कांस्टीट्यूशनल एवं पार्लियामेंटरी स्टडीज, नई दिल्ली.
3. मित्र, राम (1992), ''कास्ट पोलराईजेशन एण्ड पॉलिटिक्स' , सिण्डीकेट पब्लिकेशन, पटना.

4. मिश्र, एस0 एन0 (2011) भारतीय निर्वाचन संस्कृति : दशा एवं दिशा, विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी.
5. मिश्र, मधु सूदन (1980), रायबरेली संसदीय निर्वाचन 1980, लोकतंत्र,समीक्षा संसदीय संविधान संस्थान, नई दिल्ली, जनवरी
6. मीना (2011), उत्तर प्रदेश विधानसभा में दलित विधायकों का अध्ययन 1997–2002, पी एच डी थीसीस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.
7. मुलर, डब्ल्यू0 सी0 एण्ड स्ट्रोम, के0 (2003), कोलिएशंस गर्वमेण्ट इन वेस्टर्न यूरोप, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिअी प्रेस, लंदन.
8. मेरियम, चार्ल्स ई0 (1939), दि डेमोक्रेसी एण्ड दी डेस्पोटिज्म, मैकग्रा–हिल एण्ड कं0, न्यूयार्क.
9. मेहता, ए0 के0 एण्ड डी0 डी0 खन्ना (2003), पालिटिकल पार्टीज एण्ड पार्टी सिस्टम, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.
10. मैकडानालड, नील ए0 (1963), पार्टी पर्सपेक्स्टिज :कम्परेटिव पॉलिटिक्स, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन.
11. मोन्टिनोला, गैब्रिला आर0 (1999), पार्टीज एण्ड एकाउंटबिलअी इन दि फिलिपिंस, जर्नल आफ डेमोक्रेसी, वा0–10,
12. यंग, पी0 वी0 (1960–61), सांइटिफिक सोशल सर्वे एण्ड रिसर्च, एशिया पब्लिशिंग हाउस बाम्बे.
13. यनाई, एन0 (1999), 'व्हाई डू पोलिटिकल पार्टीज सरवाइव – एन एनालिटिकल डिस्कशन', पार्टी पालिटिक्स , अंक –5, नं0 –1,
14. रंजन, राजीव (2006), चुनाव लोकसभा और राजनीति, ज्ञान, रंगा प्रकाशन, नई दिल्ली.
15. रंगराजन, एम0 (2006), राजनीतिक व्यवस्था में संक्रमण 2004 के आम चुनावों के पश्चात भारत, शोधार्थी , अंक –2, सं0–1, जनवरी–मार्च,
16. राजकिशोर (2006), दलित राजनीति की समस्याएं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
17. राजकुमार, (2009), शासन और राजनीति,अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
18. राजकुमार, (2014), लोकतंत्र में राजनीति के मायने, कथा–क्रम, जुलाई–सितम्बर,
19. राजन, ए0 (1986), माई बहुजन समाज पार्टी, एबीसीडी प्रकाशन दिल्ली.
20. राजहंस, जी0 एस0 (2002), क्रिमिनलाईजेशन, रोल आफ मनी, मसल पॉवर एण्ड इलेक्ट्रोरल मालप्रेक्टिसेज, इन कश्यप, सुभाष सी (एडी0), नेशनल रिर्सजेन्स थ्रो इलेक्ट्रोरल रिफॉमर्स, इन शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली